

मुसतहेब्बात वा मकरुहात मुसतहेब्बात

अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क

(1) मुसतहेब्बात

मुस्तहब गुस्ल

इस्लाम की मुकद्दस शरीअत में बहुत से गुस्ल मुस्तहब हैं जिन में से कुछ यह हैं:

जुमे के दिन का गुस्ल

1- इस का वक़्त सुबह का अज़ान के बाद से सूरज के गुरुब होने तक है और बेहतर यह है कि गुस्ल ज़ोहर के करीब किया जाये (और अगर कोई शख़स उसे ज़ोहर तक अंजाम न दे तो बेहतर यह है कि अदा और कज़ा की नियत किये बग़ैर ग़रूबे आफ़ताब तक बजालाये) और अगर जुमे के दिन गुस्ल न करे तो मुस्तहब है कि हफ़ते के दिन सुबह से ग़रूबे आफ़ताब तक उस का कज़ा बजा लाये। और जो शख़स जानता हो कि उसे जुमे के दिन पानी मयस्सर न होगा तो वह रजाअन जुमेरात के दिन गुस्ल अंजाम दे सकता है और मुस्तहब है कि गुस्ले जुमा करते वक़्त यह दुआ पढ़ें:

अशहदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीकलहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व आलि मुहम्मद व इजअलनी मिनत तव्वाबीना व इजअलनी मिनल मुत्ताहिरीन।

(2-7) माहे रमाज़ान की पहली और सतरहवीं रात और उन्नीस्वी, इक्कीससवीं, और तेईसवीं रातों के पहले हिस्से का गुस्ल और चौबीसवीं रात का गुस्ल।

(8-9) ईदुलफ़ित्र और ईदे कुरबान के दिन का गुस्ल, उस का वक़्त सुब्ह की अज़ान से सूरज गुरुब होने तक है और बेहतर यह है कि ईद की नमाज़ से पहले कर लिया जाये।

(10-11) माहे ज़िल हिज्जा के आठवें और नवें दिन का गुस्ल और बेहतर यह है कि नवें दिन का गुस्ल ज़ोहर के नज़दीक किया जाये।

(12) उस शख्स का गुस्ल जिसने अपने बदन का कोई हिस्सा ऐसी मय्यित के बदन से मस किया हो जिसे गुस्ल दिया जा चुका हो हो।

(13) अहराम का गुस्ल।

- (41) हरमे मक्का में दाखिल होने का गुस्ल।
- (15) मक्काए मुकर्रमा में दाखिल होने का गुस्ल।
- (16) खान-ए-काबा की ज़ियारत का गुस्ल।
- (17) काबे में दिखिल होने का गुस्ल।
- (18) ज़िब्ह और नहर के लिये गुस्ल।
- (19) बाल मूनडने के लिए गुस्ल।
- (20) हरमे मदीना में दिखिल होने का गुस्ल।
- (21) मदीन-ए- मुनव्वरा में दाखिल होने का गुस्ल।
- (22) मस्जिदुन नबी में दाखिल होने का गुस्ल।

(23) नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहे व आलिही वसल्लम की कब्रे मुतहर से विदा होने का गुस्ल।

(24) दुश्मन के साथ मुबाहिला करने का गुस्ल।

(25) बच्चे के पैदा होने के बाद उसे गुस्ल देना।

(26) इस्तिखारा करने का गुस्ल।

(27) तलबे बारान का गुस्ल।

652 फ़ोक़हा ने मुस्तहब गुस्लों के बाब में बहुत से गुस्लों का ज़िक्र फ़रमाया जिन में से चंद यह हैं:

(1) माहे रमाज़ानुल मुबारक की तमाम ताक़ [1] रातों का गुस्ल और उस का आखरी दहाई की तमाम रातों का गुस्ल और उस का तीसरी रात के आखरी हिस्से में दूसरा गुस्ल।

- (2) माहे ज़िल हिज्जा के चौबीसवें दिन का गुस्ल।
- (3) ईदे नोरोज़ के दिन और पंद्रहवीं शाबान और नवीं और सतरहवीं रबी उल अव्वल और ज़िकादा के पच्चीसवें दिन का गुस्ल।
- (4) उस औरत का गुस्ल जिस ने अपने शौहर के अलावा किसी और के लिये खुशबू इस्तेमाल की हो।
- (5) उस शख्स का गुस्ल जो मसती की हालत में सो गया हो।
- (6) उस शख्स का गुस्ल जो किसी सूली चढ़े हुए इंसान को देखने गया हो और उसे देखा भी हो लेकिन अगर इत्तेफ़ाक़न या मज़बूरी की हालत में नज़र गई हो या अगर शहादत (गवाही) देने गया हो तो गुस्ल मुस्तहब नहीं है।
- (7) दूर या नज़दीक से मासूमीन अलैहिमुस्सलाम की ज़ियारत करने के लिए गुस्ल, लेकिन अहवत यह है कि यह तमाम गुस्ल रजा का नियत से बजा लाये जायें।

(653) उन मुस्तहब गुस्लों के साथ जिन का जिक्र मस्ला 651 में किया गया है इंसान ऐसे काम कर सकता जिनके लिए वुजू लाज़िम है जैसे नमाज़ (यानी वुजू करना ज़रूरी नहीं है) लेकिन जो गुस्ल रजा की नियत से किये जायें उनके बाद वुजू करना ज़रूरी है।

(654) अगर इंसान के ज़िम्मे कई मुस्तहब गुस्ल हों और वह शख्स सब की नियत कर के एक गुस्ल कर ले तो काफ़ी है।

[1] ताक़ राते उन रातों को कहा जाता है जिनकी गिनती में जोड़े नहीं होते जैसे पहली, तीसरी, पाँचवीं, सातवीं....।

मुस्तहब नमाज़ें

(772) मुस्तहब नमाज़ें बहुत सी हैं जिन्हें नाफ़िलह भी कहते हैं, और मुस्तहब नमाज़ों में से रोज़ाना के नाफ़िलह की बहुत ज़्यादा ताकीद की गई है। यह नमाज़ें रोज़े जुमा के अलावा चौतीस रकत हैं। जिनमें से आठ रकत ज़ोहर की, आठ रकत अस्त्र की, चार रकत मग़रिब की, एक रकत इशा की, ग़यारह रकत नमाज़े शब

(यानी तहज्जुद) की और दो रक्त सुबह की होती हैं। चूँकि एहतियाते वाजिब की बिना पर इशा की दो रक्त नफ़ल बैठकर पढ़नी ज़रूरी है इसलिए वह एक रक्त शुमार होती है। लेकिन जुमे के दिन जोहर और अस्र की सोलह रक्त नफ़ल पर चार रक्त का इज़ाफ़ा हो जाता है। और बेहतर है कि यह पूरी बीस रक्तें ज़वाल से पहले पढ़ी जायें।

(773) नमाज़े शब की ग्यारह रक्तों में से आठ रक्तें नाफ़िलह-ए-शब की नियत से और दो रक्त नमाज़े शफ़ा की नियत से और एक रक्त नमाज़े वत्र की नियत से पढ़नी ज़रूरी हैं। नाफ़िल-ए-शब का मुकम्मल तरीका दुआ की किताबों में बयान किया गया है।

(774) नाफ़िलह नमाज़ें बैठ कर भी पढ़ी जा सकती हैं लेकिन बाज़ फुक्राहा कहते हैं कि इस सूरत में बेहतर यह है कि बैठ कर पढ़ी जाने वाली नाफ़िलह नमाज़ों की दो रक्तों को एक रक्त शुमार किया जाये मसलन जो इंसान जोहर की नाफ़िलह जो कि आठ रक्त हैं, बैठकर पढ़ना चाहे तो उसके लिए बेहतर यह है कि सोलह रक्तें पढ़े और अगर चाहे कि नमाज़े वत्र बैठ कर पढ़े तो एक एक रक्त की दो नमाज़ें पढ़े। ता हम इस काम का बेहतर होना मालूम नहीं है लेकिन रजा की नियत से अंजाम दे तो कोई इशकाल नहीं है।

(775) ज़ोहर और अस की नाफ़िलह नमाज़ें सफ़र में नहीं पढ़नी चाहिए और अगर इशा की नाफ़िलह रजा की नियत से पढ़ी जाये तो कोई हरज नहीं है।

मुस्तहब रोज़े

हराम और मकरूह रोज़ों के अलावा जिन का ज़िक्र किया जा चुका है साल के तमाम दिनों के रोज़े मुस्तहब है और बाज़ दिनों के रोज़े रखने की बहुत ताकीद की गई है जिन में से चंद यह हैं:

(1) हर महीने की पहली और आख़री जुमेरात और पहला बुध जो महीने की दसवीं तारीख के बाद आये। और अगर कोई शख्स यह रोज़े न रखे तो मुस्तहब है कि उन की कज़ा करे और रोज़ा बिल्कुल न रख सकता हो तो मुस्तहब है कि हर दिन के बदले एक मुद तआम या 12/6 नुखुद सिक्केदार चाँदी फ़कीर को दे।

(2) हर महीने की तेरहवीं, चौदहवीं और पंद्रहवीं तारीख।

(3) रजब और शाबान के पूरे महीने के रोज़े। या उन दो महीनों में जितने रोज़े रख सकें चाहे वह एक दिन ही क्यों न हो।

(4) ईदे नौ रोज़ के दिन।

(5) शव्वाल की चौथी से नवीं तारीख तक।

(6) ज़ीकादा की पच्चीसवीं और इक्कीसवीं तारीख।

(7) ज़ीकादा की पहली तारीख से नवीं तारीख (यौमे अरफ़ा) तक लेकिन अगर इंसान रोज़े की वजह से बेदार होने वाली कमज़ोरी की बिना पर यौमे अरफ़ा की दुआयें न पढ़ सके तो उस दिन का रोज़ा मकरूह है।

(8) ईदे सईदे ग़दीर के दिन (18 ज़िलहिज्जा)

(9) रोज़े मुबाहिला (24 ज़िलहिज्जा)

(10) मुहर्रामुल हराम की पहली, तीसरी और सातवीं तारीख।

(11) रसूसले अकरम (स0) की विलादत का दिन (17 रबी-उल-अव्वल)

(12) जमादीयुल अक्वल की पंद्रहवी तारीख।

और ईदे बेसत यानी रसूले अकरम (स0) के ऐलाने रिसालत के दिन (27 रजब) को भी रोज़ा रखना मुस्तहब है। और जो शख्स मुस्तहब रोज़ा रखे उस के लिए वाजिब नहीं है कि उसे इख़िताम तक ही पहुँचाये बल्कि अगर उस का काई मोमिन भाई उसे खाने की दावत दे तो मुस्तहब है कि उस की दावत क़बूल कर ले और दिन में ही रोज़ा खोल ले चाहे ज़ोहर के बाद ही क्यों न हो।

पेशाब पखाना करने के मुस्तहबबात

हर शख्स के लिए मुस्तहब है कि जब भी पेशाब पखाना करने के लिए जाये तो ऐसी जगह पर बैठे जहाँ उसे कोई देख न सके। और पखाने में दाखिल होते वक़्त पहले अपना बायाँ पैर अन्दर रखे और वहाँ से निकलते वक़्त पहले दाहिना पैर बाहर रखे और यह भी मुस्तहब है पेशाब पखाना करते वक़्त अपने सर को (टोपी , दुपट्टे वगैरह) से ढक कर रखे और बदन का बोझ अपने बायें पैर पर रखे।

नमाज़ से पहले, सोने से पहले, जिमाअ (संभोग) से पहले और मनी (वीर्य) के निकल जाने के बाद पेशाब करना मुस्तहब है।

नमाज़े गुफ़ैला

मुस्तहब्बी नमाज़ों में से एक नमाज़े गुफ़ैला है, जो मगरिब व इशा की नमाज़ के बीच पढ़ी जाती है। इसका वक़्त नमाज़े मगरिब के बाद पश्चिम की तरफ़ की सुर्खी ख़त्म होने तक है।

यह नमाज़ दो रकअत है और पहली रकअत में हम्द के बाद सूः की जगह यह आयत पढ़ी जाती है “व ज़न्नूनि इज़ ज़हाबा मुगाज़िबन फ़ज़न्ना अन लन नक़दिरा अलैहि फ़नादा फ़िज़ज़ुलिमाति

अन ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तु मिन अज़ज़ालीमीन फ़स्तजबना लहु व नज्जैनाहु मिन अलगम्मि व कज़ालिका नुनजिल मोमिनीना ”

और दूसरी रकअत में हम्द के बाद यह

आयत पढ़ी जाती है

“व इन्दा मफ़ातिहुल ग़ैबि ला यअलमुहा इल्ला हुवा व यअलमु मा फ़िल बर्र वल बहरे व मा तसकुतु मिन वरक़तिन इल्ला यअलमुहा

व ला हब्बतिन फ़ी ज़ुलुमातिल अर्ज़ि व ला रतबिं व ला याबिसिं व इल्ला फ़ी किताबिम मुबीन।”

और कुनूत में यह दुआ पढ़ी जाती है “

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका बिमफ़ातिहिल ग़ैबि अल्लती ला यअलमुहा इल्ला
अन्ता अन तुसल्लिया अला मुहम्मदिवं व आलि मुहम्मद व अन तफ़अला बी

इसके बाद अपनी दुआ माँगे

और फिर यह दुआ पढ़े

अल्लाहुम्मा अन्ता वलियु नेअमति वल कादिरु अला तलिबति तअलमु हा-जति
फ़असअलुका बिहक्कि मुहम्मदिवं व आलि मुहम्मदिन अलैहि व अलैहिमुस्सलाम
लम्मा क़जैतहा ली।

मकरुहात

वह कार्य जो मुजनिब के लिए मकरूह हैं

362 मुजनिब इंसान के लिए नौ कार्य मकरूह हैं।

· खाना, पीना लेकिन अगर हाथ मुँह धो लिये जायें और कुल्ली कर ली जाये तो मकरूह नहीं है। और अगर सिर्फ़ हाथ धो लिये जायें तो तब भी कराहत कम हो जायेगी।

· कुरआने करीम की सात से ज़्यादा उन आयतों को पढ़ना जिनमें वाजिब सजदा न हो।

· कुरआने मजीद की ज़िल्द, हाशिये या अलफ़ाज़ के बीच की खाली जगह को छूना।

· कुरआने करीम को अपने साथ रखना।

· सोना- लेकिन अगर वुज़ू कर ले या पानी न होने की वजह से गुस्त्र के बदले तयम्मूम कर ले इसके बाद सोना मकरूह नहीं है।

· मेंहदी या इससे मिलती जुलती किसी चीज़ से खिज़ाब करना।

· बदन पर तेल की मालिश करना।

· एहतिलाम (स्वप्न दोष) हो जाने के बाद संभोग करना।

वह चीज़ें जो रोज़ेदार के लिए मकरूह हैं

(1666) रोज़ेदार के लिए कुछ चीज़ें मकरूह हैं जिन में से बाज़ यह हैं-

(1) आँख में दवा डालना और सुरमा लागाना जब कि उस का मज़ा या बू हलक़ में पहुँचे।

(2) हर ऐसा काम करना जो कि कमज़ोरी का बाइस हो मसलन फ़स्ट ख़ुलवाना और हम्माम जाना।

(3) (नाक से) निसवार खींचना इस शर्त के साथ कि यह इल्म न हो कि हलक़ तक पहुँचेगी और अगर यह इल्म हो कि हलक़ तक पहुँचेगी तो उस का इस्तेमाल जायज़ नहीं है।

(4) ख़ुशबूदार जड़ी बूटियां सूँघना।

(5) औरत का पानी में बैठना।

(6) शियाफ़ इस्तेमाल करना यानी किसी खुशक चीज़ से इनेमा लेना।

(7) जो लिबास पहन रखा हो उसे तर करना।

(8) दाँत निकलवाना और हर वह काम करना जिस की वजह से मुँह से खून निकले।

(9) तर लकड़ी से मिसवाक करना।

(10) बिला वजह पानी या कोई और सय्याल (द्रव) चीज़ मुँह में डालना।

और यह भी मकरूह है कि मनी के क़स्द के बग़ैर इंसान अपनी बीवी का बोसा ले या कोई शहवत अंगेज़ काम करे और अगर ऐसा काम करना मनी निकालेने के क़स्द से हो और मनी न निकले तो एहतियाते लाज़िम की बिना पर रोज़ा बातिल हो जाता है।

पेशाब पखाना करने के मकरूहात

सूरज चाँद की तरफ़ चेहरा कर के पेशाब पखाना करना मकरूह है। लेकिन अगर अपनी शर्म गाह को किसी चीज़ के ज़रिये ढक ले तो फिर मकरूह नहीं है। इसके अलावा हवा के रुख के मुक़ाबिल, गली कूचों में, घरों के दरवाज़ों के सामने और फलदार दरख़्तों के नीचे पेशाब पखाना करना मकरूह है। इसी तरह पेशाब पखाना करते वक़्त कोई चीज़ खाना, ज़्यादा देर तक बैठे रहना, दाहिने हाथ से पेशाब पखाने के मक़ाम को धोना और इस हालत में बातें करना भी मकरूह है लेकिन अगर कोई मजबूरी हो या ज़िक़्रे खुदा किया जाये तो कोई हरज नहीं है।

खड़े हो कर पेशाब करना मकरूह है। और इसी तरह सख़्त ज़मीन पर, जानवरों के सुराखों पर और पानी में खास तौर पर रुके हुए पानी में पेशाब करना भी मकरूह है। पेशाब और पखाने को रोकना मकरूह है और अगर बदन के लिए मुकम्मल तौर पर नुक़सान देह हो तो हराम है।

फेहरिस्त

मुसतहेब्बात वा मकरुहात मुसतहेब्बात	1
(1) मुसतहेब्बात	2
मुस्तहब गुस्ल	2
मुस्तहब नमाज़ें.....	7
मुस्तहब रोज़े.....	9
पेशाब पखाना करने के मुसतहब्बात.....	11
नमाज़े गुफ़ैला.....	12
मकरुहात	13
वह कार्य जो मुजनिब के लिए मकरुह हैं.....	13
वह चीज़ें जो रोज़ेदार के लिए मकरुह हैं.....	15
पेशाब पखाना करने के मकरुहात.....	17
फेहरिस्त	18